Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 14-10-2021, Accepted: 30-10-2021, Published: 15-11-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 29-31

आधुनिकता पूर्व के हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की अभिव्यक्ति

Rahul Dev M
Research Scholar, Department of Hindi, Shree Shankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala, India

सारांश

व्यंग्य हिन्दी साहित्य में आदिकाल से ही रहा है। वैदिक काल से ही व्यंग्य भारतीय साहित्य का हिस्सा रहा है। आदिकालीन साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग परिहास करने के लिए किया करता था। व्यंग्य का लक्ष्य समाज में सुधार लाना या समाज में परिवर्तन लाना है। विकृतियां व्यंग्य को जनम देता है, सं 1050 से लेकर सं; 1900 तक के समय में भारत कई कठिन परिस्थितियों से गुजरा राजनीतिक स्तर पर हो या सामाजिक स्तर पर, हर क्षेत्र में विकृतियां फैली हुई थी लेकिन भक्तिकाल के कबीर दास के अलावा किसी और कवि ने व्यंग्य लेखन नहीं किया। भक्तिकाल में कबीर के अलावा तुलसी दास और सूर दास के रचनाओं में हमें व्यंग्य के नमूने देखने को मिलते हैं लेकिन वह सब निम्न कोड़ी के हैं। रीतिकाल में बिहारी के कुछ दोहों में व्यंग्य की झलक हमें देखने को मिलते हैं वह भी उच्च कोड़ी का नहीं हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल से पूर्व के हिन्दी साहित्य में कबीर के अलावा कोई और ऐसा कवि नहीं है जिसे हम व्यंग्यकार की संज्ञा दे सकते हैं।

मूल शब्द: व्यंग्य, कबीर, भक्तिकाल, बिहारी, आदिकाल

प्रस्तावना

साहित्य का जनम जब से हुआ है तब व्यंग्य का भी जनम हुआ । मनुष्य को हमेशा विसंगतियों का सामना करना पड़ा है वह उन विसंगतियों से छिड़कर वह गाली-गलोच करता रहता था उसी से व्यंग्य की उत्पत्ति हम मान सकते हैं। व्यंग्य को अंग्रेजी में 'सटायर' "satire" कहते हैं, जिसका अर्थ हैं गूढ़ार्थ 'hidden meaning'। व्यंग्य को परिभाषित करते हुए डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अधरोष्ठ से हंस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी अपहसास्पद बना लेना हो जाता है।"[1]

संस्कृत रचनाओं में परिहास, वक्रोक्ति आदि के रूप में हम व्यंग्य को देख पाते हैं। वैदिक साहित्य में चवार्क जैसे व्यंग्य कवियों द्वारा समकालीन विसंगतियों का प्रहार करते हुए उस समय के साहित्य में हम देख सकते हैं। संस्कृत साहित्य में व्यंग्य शब्द का प्रयोग निंदा के रूप में होता था यह रामायण और महाभारत में हम देख सकते हैं । रामायण में परशुराम-लक्ष्मण संवाद, महाभारत में द्रौपदी-दुर्योदन संवाद आदि इसके उदाहरण हैं। आगे चलकर जब हम अपभ्रंश साहित्य में आते हैं तो सिद्धों द्वारा समकालीन कुरीतियों पर किए गए कई व्यंग्यों के उदाहरण हमारे सामने आते हैं। कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत है:

"पंडिअ सअल सत्त बखाणई । दही रुद्ध वसंत न जाणाई।" [2]

इन पंक्तियों में अंतसाधना और पंडितों पर फटकार किया गया है। विसंगतियां हर समय समाज में थी उस का रूप भले ही अलग थे उस समय की समकालीन रचनाकारों द्वारा उसपर व्यंग्य भी किए गए हैं।
अपभ्रंश कालीन परिस्थितियां विसंगतियों से भरी थी। जाति प्रथा, सति प्रथा, वर्ण व्यवस्था, बहुपत्नी प्रथा, राजाओं के बीच में हो रहे लगातार युद्ध आदि के कारण आम जनता हताश और निराश था लेकिन उनकी हताश परिस्थितियों का आख्यान उस समय के रचनकारों ने नहीं किया। अपभ्रंश कालीन समय परिस्थितियां व्यंग्य लेखन के लिए अनुकूल था लेकिन उस समय के रचनाओं में व्यंग्य का प्रयोग विसंगतियों का चित्रण करने के लिए नहीं बल्कि उनके द्वारा कायरता या भीरुता का चित्रण करने के लिए प्रयुक्त हुआ था। उदाहरण देखिए

"बारह बरस लौ कूकर जीवे,अरु तेरह लौ जिये सियार।
बारह अठारह क्षत्रीय जीवे,आगे जीवन को धिक्कार।"[3]

आदिकाल के धार्मिक काव्यधारा में सिद्धों और नाथों द्वारा धार्मिक पाखंड का खुलकर खंडन किया गया। धार्मिक अंधविस्वास और आडंबरों पर सिद्धों और नाथों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से किए गए प्रहार से हम हिन्दी व्यंग्य की शुरुआत मान सकते है। हिन्दी का पहला व्यंग्य कवि अमीर खुसरो है इसमें कोई शक नहीं है। अमीर खुसरो ने जनता के मनोरंजन के लिए जो पहेलियाँ और मुकरिया लिखीं उनमें हास्य और व्यंग्य की झलक हमें देखने को मिलते हैं "कुछ भी हो, आदिकाल में जो अमीर खुसरो हुए थे उनकी पहेलियां और मुकारियां ही प्रसिद्ध है, जिनमें मनोरंजन और जीवन पर गहरे व्यंग्य एक साथ देखने को मिलते है।" [4]

भक्तिकलीन समय में भारत की परिस्थितियों कोई सुधार नहीं आया बल्कि परस्थितियां और जटिल होती चली गईं। धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों में अशान्ति और संघर्ष फैलने लगे। मुग़लों के आने से देश में आतंक और भय का माहौल बन गया ऊपर से जाति प्रथा, छुआ-छूत आदि कुप्रथाएँ अपनी चरम सीमा पर थीं। यह समय व्यंग्य के लिए अनुकूल था। इस समय कबीर दास का आगमन हुआ उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों पर जमकर प्रहार किया। कबीर दास ने अपने समय के विसंगतियों को खुद भोगा था। एक व्यंग्यकार का परम लक्ष्य समाज का सुधार करना होता है कबीर दास जी से बड़ा समाज सुधारक हमे पूरे हिन्दी साहित्य में देखने को नहीं मिलते। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर दास को हिन्दी का सर्वश्रेष्ट व्यंग्यकार माना है। डॉ ललिता यादव जि कबीर दास को एक युग प्रवर्तक व्यंग्यकार मानती हैं "भक्तिकाल में कबीर का विशिष्ट स्थान रहा है। ये एक युग प्रवर्तक व्यंग्यकार थे।"[5]
कबीर दास जी के व्यंग्य का कुछ उदाहरण देखिए

"कंकर पत्थर जोरि के मस्जिद लाई बनाय, ता चढ़ी मुल्ला बांग दे का बहरा भया खुदाय।"[6]
"पाथर पूजे हरी मिले तो में पूजूं पहाड़"[7]

कबीर दस जी ने हिंदुओं और मुसलमानों के व्यर्थ रीति रिवासों पर प्रहार किया। कबीर दास के व्यंग्य इतना तीव्र था जिसपर भी लग जाता था वे तड़प उड़ते थे। कबीर दास जी आज तक के सर्वश्रेष्ट व्यंग्यकार है उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से जो समाज सुधार का कार्य किया है वह आज के समकालीन व्यंग्यकारों के लिए भी प्रेरणा का पात्र रहा है।

सूरदास जी ने भ्रमर गीत लिखकर भक्तिकालीन व्यंग्य कवियों में अपना स्थान बना लिया है सूर दास जी का व्यंग्य मीठी प्रेम की चाशनी में डूब हुआ व्यंग्य है।सूर दास का लक्ष्य समाज सुधार नहीं था बल्कि वे सगुण भक्ति को निर्गुण भक्ति से श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते थे इसलिए भ्रमर गीत में व्यंग्य उपहास आदि के रूप में हमें देखने को मिलते हैं। तुलसी दास जी के साहित्य में जो व्यंग्य मिलते हैं उसमें हमें तत्कालीन विसंगतियों के प्रति तुलसी दास जी का आक्रोश देखने को मिलते हैं। डॉ ललिता यादव जि का कहना है "तुलसीदास ने संभवतः तत्कालीन भ्रष्ट एवं अन्याय अत्याचार-पूर्ण शासन के प्रति मन में तिरस्कार भाव एक कुशल एवं सुखद रामराज्य की कल्पना कर परोक्ष द्वारा तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक अनीतियों विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।"[8]

रामचारित मानस में कैकेयी-मंथरा प्रसंग, शूर्पनखा प्रसंग, बाली-सुग्रीव प्रसंग, लक्ष्मण-परशुराम संवाद, रावण-अंगद संवाद आदि में व्यंग्य देखने को मिलते हैं।

रीतिकाल में भारत की परिस्थितियां और खराब होती गई। रीतिकलीन समय में समाज विलासीनता में डूब गया था व्यंग्य समाज का ऐना बन सकता था लेकिन खेद की बात यह थी कि आदिकाल के समान रीतिकाल में भी व्यंग्य साहित्य नहीं लिखा गया। रीतिकाल नैतिक मूल्यों के पतन का समय रहा है मुग़ल साम्राज्य का पतन होने लगा था, अंग्रेजों ने भारत पर अपना कब्जा जमा लिया था पूरा देश छोटे-छोटे राज्यों में बट चुके थे। बाल विवाह, सती प्रथा, बलि आदि कुप्रथाएं समाज में व्याप्त थी लेकिन सब कवि नारी के सौन्दर्य चित्रण तथा लक्षण ग्रंथ लिखने में मस्त थे। रीतिकाल के साहित्य में व्यंग्य बिहारी के साहित्य में ही हमें देखने को मिलते हैं।

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहीं विकास इहि काल।
आली कली ही सों बिंधयो,आगे कोण हवाल।।"[9]

आधुनिक काल के पूर्व के हिन्दी साहित्य में कबीर को छोड़कर किसी और रचनाकार को हम व्यंग्यकार नहीं कह सकते हैं। आदिकाल,भक्तिकाल और रीतिकाल परिस्थितियां निश्चित ही व्यंग्य लेखन के लिए अनुकूल था लेकिन कबीर के अलावा किसी और रचनाकार ने समाज को सुधारने का प्रयास नहीं किया।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदि, हजारी प्रसाद,कबीर,प्रथम संस्करण, हंसपुरम कानपुर, वान्या पब्लिकैशन, 2016 पृष्ठ संख्या:164
2. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, आठवां संस्करण, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211001, लोक भारती प्रकाशन, 2012 पृष्ठ संख्या:4
3. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अडतालीसवां संस्करण, ए-95, सेक्टर-5, नौएडा-201301, मयूर पेपरबैकस, 2015, पृष्ट संख्या:67
4. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अडतालीसवां संस्करण, ए-95, सेक्टर-5, नौएडा-201301, मयूर पेपरबैकस, 2015, पृष्ट संख्या: 73
5. यादव, ललिता, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास, प्रथम संस्करण, c-32, आर्यनगर सोसायटी, पटपदगंज, दिल्ली-110092, नीरज बुक सेंटर, 2015, पृष्ट संख्या: 25
6. readerblog.navabharattimes.indiatimes.com
7. readerblog.navabharattimes.indiatimes.com
8. यादव, ललिता, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास, प्रथम संस्करण, c-32, आर्यनगर सोसायटी, पटपदगंज, दिल्ली-110092, नीरज बुक सेंटर, 2015, पृष्ट संख्या: 26
9. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अडतालीसवां संस्करण, ए-95, सेक्टर-5, नौएडा-201301, मयूर पेपरबैकस, 2015, पृष्ट संख्या: 324.